सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बिहार के अभिजात वर्ग की भूमिका

डॉ. राघव कुमार

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के मूल्यांकन से पता चलता है कि बिहार के लोगों ने इस आन्दोलन में भारत के अन्य प्रान्तों से आगे बढ़कर काम किया। छविनाथ पाण्डेय ने लिखा है, ''1930 ई0 और 1932 ई0 के आन्दोलनों में बिहार की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है इसने अपनी खास डाक जारी की। नियमित रूप से साप्ताहिक डाक प्रान्तीय कांग्रेस कार्यालय में आती रही और वहाँ से भी सर्वत्र आदेश जाते रहे। साप्ताहिक और पीछे पाक्षिक बुलेटिनें भी नियमित रूप से निकलती रहीं। प्रान्त की बुलेटिनें अलग थीं, जिलों की अलग और थानों की अलग। यहीं की कांग्रेस को इस बात श्रेय था कि उसने सस्ते साइक्लोस्टाइल बनाना भी शुरू किया। प्रान्त के जिलों और थानों के सिवा अन्य प्रान्तों को भी इसने साइक्लोस्टाइल दिए। अखबारों के मुँह बन्द रहते हुए भी इन बुलेटिनों के द्वारा आन्दोलन–संबंधी और पुलिस के अत्याचारों के समाचार नियमित रूप से लोगों को मिलते रहे।..... बिहार के लिये यह अभिमान की बात है कि सारे हिन्दुस्तान में यही एक प्रान्त था, जहाँ का कांग्रेसी संगठन टूटने नहीं पाया। आदि से अन्त तक संगठन का सूत्र बराबर दृढ़ता से कायम रहा।''